प्रिय गुलमोहर

(साझा संकलन)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संकलनकर्ता : डॉ प्रीति समकित सुराना

प्रिय गुलमोहर

(साझा संकलन)

संकलनकर्ता - डॉ. प्रीति समकित सुराना

प्रकाशक : अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन,

वारासिवनी (म.प्र.)

मो. : 9009423393, मेल : antrashabdshakti@gmail.com

भूमिका

प्रकृति का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। प्रकृति सदा से हमारे लिए आराध्य रही है। नदी, पहाड़, समुद्र, तालाब, झरने, पेड़-पौधे आदि प्रकृति के विभिन्न स्वरूप किसी न किसी रूप में हमारे जीवन का आधार हैं। हमारे शास्त्र भी विभिन्न संदर्भों में प्रकृति के इन स्वरूपों की स्तुति करते हैं।

आज हम यहाँ बात कर रहे हैं "गुलमोहर" वृक्ष की। यह एक ऐसा विरला वृक्ष है, जो ग्रीष्मकाल में, जब सभी जल-स्रोत सूखने लगते हैं, अधिकांश वनस्पतियाँ मुरझाने लगती है, तब यह लहलहाता हुआ चहुँओर अपनी छवि बिखेरता नजर आता है।

मैं यदि अपनी स्मृति खंगालूँ, तो ठेठ ग्रामीण परिवेश में प्रकृति के मध्य गुजरे बचपन में मेरा गुलमोहर से गहरा नाता रहा है। गर्मी की छुट्टियों में स्कूल प्रांगण में गुलमोहर के तले गुलाम लकड़ी व अन्य खेल खेलना, गुलमोहर के गुच्छ से "राजा पत्ति" तोड़कर खाना, इसके लिए मित्रों से झगड़ा तक कर लेना, बाल्यावस्था की सुनहरी यादों में समाया हुआ है।

तब केवल खेल की सुविधा (छाँव) मिल जाना ही हम बच्चों की प्राथमिकता थी, गुलमोहर के गहरे 'जीवन दर्शन' को समझने की हमारी उम्र नहीं थी।

परिपक्वता के दौर में जब साहित्य की अभिप्रेरक संस्था "अंतराशब्द शक्ति" ने अपने पटल पर "गुलमोहर" को विषय आधार बनाया और तब कलमकारों ने जो प्रतिसाद दिया, वह कलमकारों द्वारा प्रकृति की निर्मल भाव से की गई आराधना ही है।

इसी आराधना को काव्यांजलि (पुस्तिकाकार) के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास डॉ. प्रीति समकितजी सुराना द्वारा यहाँ किया गया है, जो कि अभिनंदनीय है।

इति।

प्रदीप कुमार अरोरा, पुणे

अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1. गुलमोहर सी ज़िन्दगी	दिनकर राव ‘दिनकर’	7
2. खुशियों का मेला	साधना छिरोल्या	8
3. गुलमोहर तले	डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई	9
4. गुलमोहर	अजय पाण्डेय ‘बेबस’	10
5. सीधा सादा गुलमोहर	सोनम लड़ीवाला	11
6. गुलमोहर : ईश्वर का सुंदर उपहार	स्मृति गुप्ता, जबलपुर	12-13
7. प्रकृति की अनोखी कृति “गुलमोहर”	डॉ. प्रीति समकित सुराना	14-16
8. देखो कैसे सजकर आया गुलमोहर	डॉ. संगीता बिंदल	17
9. मुस्कुराता गुलमोहर	अदिति रूसिया	18-19
10. आँगन में गुलमोहर आये	डॉ. मधु प्रधान	20
11. एक गुलमोहर का एकालाप	आनंद पाण्डेय “केवल”	21-22
12. तुम्हें तो आना ही था	प्रदीप कुमार अरोरा	23
13. आशियाना पथिक का	सीता गुप्ता	24-25
14. गुलमोहर का खिलना	किरण मोर	26-27
15. गुलमोहर का पेड़	मुक्ति भंडारी ‘ममता’	28
16. गुलमोहर मुस्कुराता है	मंजू सरावगी ‘मंजरी’	29

17. रंग बिरंगे होते गुलमोहर	ऊषा नौगरहिया	30
18. गुलमोहर का रंग सुहाना	राधा गोयल	31-32
19. धूप में तपते हुए से गुलमोहर	पद्मा मिश्रा	33
20. सिंदूरी गुलमोहर	लीना शर्मा	34-35
21. गुलमोहर तुम कैसे हो	रमा 'प्रेम शांति'	36-37
22. गुलमोहर सी औरतें	कीर्ति प्रदीप वर्मा	38-39
23. गुलमोहर का नियति चक्र	नमिता दुबे 'मिशा'	40-41
24. पाँच वृक्ष लगाओ	अर्चना कटारे	42
25. जीवट गुलमोहर	ख़ुशी, प्रयागराज	43
26. मेरे बागीचे की जान	प्रणव राज, कैमूर (बिहार)	44
27. गुलमोहर अनुपम कृति	डॉ. आशु जैन	45
28. सूर्ख गुलमोहर	प्रेमसिंह "काव्या"	46

1. गुलमोहर सी ज़िन्दगी

गुलमोहर सी ज़िन्दगी में
प्रीत है, अनुराग है।
पीर का अतिरेक है,
पर ये गुलाबी फाग है।

घुल रहे हैं रंग कितने,
धुल रहा हर मैल है।
मन के वृन्दावन में मंचित
बंदगी का खेल है।

आस्था, विश्वास के
क़दमों में सर करना पड़ा।
धूप को मुट्ठी में लेकर
ये सफर करना पड़ा।

दिनकर राव 'दिनकर'

2. खुशियों का मेला

हरदम खुशियों का मेला सजे,
सबके इस प्यारे जीवन में।।

टेशू के जैसी भोर मिले,
रजनीगंधा सी शाम ढले,
गुलमोहर जैसी दोपहरी,
हरदम मिले इस जीवन में।।

हर सुबह होली के रंग सजें,
हर शाम दिवाली के दीप जलें,
फागुन के जैसी पुरवाई,
हरदम चले इस जीवन में।।

हर ख़्वाहिश पूरी हो सबकी,
सब फूलें-फलें, आबाद रहें,
खुशियों की बारिश होती रहे,
सबके इस प्यारे जीवन में।।

साधना छिरोल्या, दमोह (मध्य प्रदेश)

3. गुलमोहर तले

गुलमोहर से मेरा रिश्ता है बहुत पुराना।
यह प्यारा सा नाम मैंने अपने पिता से जाना।

बचपन में जाती थी पैदल उनके साथ
जब-तब बैंक, डाकखाने और एफ.आर.आई.
कार्यालय में।
मार्ग में आते वृक्ष-पौधे,
सबके नाम बताते चलते थे।

यह रीठा, बोगनविलिया,
नीम, तुन, शीशम, कीकर, थ्यूजा,
यह पीले फूलों वाला
अपनी आभा बिखेरता अमलतास,
लाल रंग के फूलों से लदा
राजा सा दिख रहा ये गुलमोहर।

कहते हैं, यह वृक्ष देखो,
पीले और लाल रंग भरते प्राण
जीवन में सबके सदा,
मिटा संताप, करते दुखों का निदान।

गुलमोहर है मेरे पिता सा
स्नेहशील, सहृदय।
जब-जब बैठती हूँ गुलमोहर तले,
अपने पुष्प बिखरा देता है आशीष।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

4. गुलमोहर

प्रकृति की रहे अद्भुत दुनिया और ये श्रृंगार।
लाल, पीले और नीले रंगों का है उपहार।।

ग्रीष्म ऋतु में खिला मिले, वो है गुलमोहर।
देखें तो आँखों को सुकून मिले, रंग मनोहर।।

घनी पत्तियाँ, शीतल हैं जिन पेड़ों की छाँव।
गुलमोहर ऐसे खड़े मिलेंगे शहर या कि गाँव।।

आशियाना सजाते, कलरव करते हैं परिंदे।
भीषण गर्मी से राहत पाते दिखते हैं कई बंदे।।

आश्रयदाता होता पंछियों का जो भी पेड़।
गुलमोहर भी एक जैसे होते कोई और पेड़।।

मिले छाँव राहगीरों को, लगाएँ हम गुलमोहर।
सजा मिले धरती और सुंदर लगें गाँव-शहर।।

अजय पाण्डेय 'बेबस'

5. सीधा-सादा गुलमोहर

सीधा-सादा गुलमोहर,
गर्मी में मुस्काता,
लाल रंग से दमक-दमक,
कृष्ण-मुकुट सजाता।

इसलिए तो जग में यह
कृष्णचूड़ कहलाता,
तपती धूप में राहों को
शीतल देता छाया।

मेडागास्कर की धरती है इसकी जन्मभूमि,
सुंदरता से भर देता यह प्रकृति की हर भूमि।

आँखों को शीतलता देता,
पथिकों को छाया,
इस सुंदर से वृक्ष ने जग में नाम कमाया।

सोनम लड़ीवाला, जयपुर, राजस्थान

6. गुलमोहर : ईश्वर का सुंदर उपहार

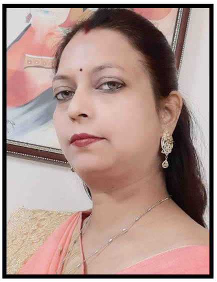

लाल, पीले, नारंगी तुम लगते कितने सुंदर हो।
बड़ी-बड़ी पत्तियों से तुम देते शीतल छाया हो।

बड़ी ही अनुपम छटा तुम्हारी लगती सबको प्यारी है।
तुमसे मेरी बचपन से ही रही न्यारी सी यारी है।

हाथ पकड़कर दादा जी का जब मैं सड़कों पर जाता था,
देख के तुम्हारी सुंदरता को ठिठक खड़ा हो जाता था।

बड़ा हुआ तो कितनी रचनाएँ लिखीं तुम्हारी सुंदरता पर।
जवानी की दहलीज़ पे कदम रखा, प्रेम मेरा यहीं परवान चढ़ा।

हाथ थाम पूनम का मैं जीवन में आगे यहीं बढ़ा।
कितने वादे, कितनी कसमें खाईं थीं हम दोनों ने।

इन्द्रधनुष से रंग भरे थे प्यारे से उन पलछिन में।
कैसे साथ बिताएँगे जीवन, गढ़ी कहानी थी हमने।

हम दोनों की सच्ची प्रीत के तुम ही तो इक साक्षी हो।
मेरे प्यारे से गुलमोहर, तुम सुख-दुख के हमारे साथी हो।

रंग भर देते पतझड़ में, तुम देते छाया तपती गर्मी में।

धरती का सौंदर्य बढ़ाते तुम पतझड़ के मौसम में।

तुमसे लिपट शीतल हो जाती गर्म तप्त हवाएँ भी।

केवल सुंदरता का नहीं हो तुम, औषधीय गुणों की खान।

प्रकृति की अनुपम छटा निखारते,

ईश्वर का सुंदर उपहार।

हाँ, गुलमोहर, तुम हो ईश्वर का सुंदर उपहार।

स्मृति गुप्ता, जबलपुर

7. प्रकृति की अनोखी कृति "गुलमोहर"

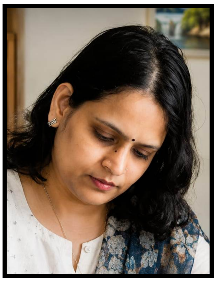

तपती दोपहरों के माथे पर जब समय अंगार
लिखता है,
जब धूल भरे रास्तों पर मनुष्य अपने ही भीतर
सूखने लगता है,
तब कहीं दूर कोई ‘Delonix regia’ धीरे-धीरे
आग पहनकर खिलता है।

लोग उसे "गुलमोहर" कहते हैं।
शायद इसलिए कि वह फूलों का नहीं,
धधकते हुए मन का मोहरबंद मौसम है।

कोई उसे ‘कृष्णचूड़ा’ कहता है,
क्योंकि उसके भीतर राधा की प्रतीक्षा भी है और कृष्ण का विरह भी।
उसकी शाखाओं पर सिर्फ फूल नहीं खिलते,
अनगिनत अधूरी बाँसुरियों की तानें लाल होकर झूमती हैं।

किसी ने उसे ‘अग्निपुष्प’ कहा,
और सच ही तो है,
इतनी तपिश के बाद भी जो जलकर राख नहीं होता,
बल्कि और अधिक खिल उठता है,
वह फूल नहीं, तप का चरम होता है।

वह ‘राधाचूड़ा’ भी है।

प्रेम की वह अंतिम आभा,

जो मिलन से नहीं, प्रतीक्षा से जन्म लेती है।

जैसे किसी स्त्री ने अपने समर्पण को फूलों में बदलकर

धरती पर टाँक दिया हो।

बच्चे उसे ‘मोरपंखी वृक्ष’ कहते हैं,

क्योंकि उसकी पत्तियों में बारिश से पहले

मोर के पंखों जैसी हरियाली काँपती है।

और सचमुच, जब हवा गुजरती है,

लगता है धरती ने अपने दुखों पर हरा आँचल रख दिया हो।

पर मेरे लिए वह केवल वृक्ष नहीं,

एक सम्पूर्ण युग का प्रतिरोध है।

इसीलिए शायद उसे ‘अग्निवृक्ष’ कहा गया।

क्योंकि वह सिखाता है,

जलना विनाश नहीं होता, यदि भीतर जीवन बचा हो।

कवियों ने उसे ‘ज्वालातरु’ कहा,

क्योंकि उसकी डालियों पर ऋतुएँ दीपक बनकर जलती हैं।

साधकों ने कहा,

यह 'अग्निशिखा' वृक्ष है,
जो तपती पृथ्वी की प्रार्थना को आकाश तक पहुँचाता है।

और सच पूछो तो गुलमोहर किसी वनस्पति का नाम नहीं,
वह मनुष्य की उस जिद का नाम है
जो सबसे कठिन समय में भी रंग चुन लेती है।

वह धरती की खुली हुई आग है,
धूप का उत्सव है,
थके हुए समय की लाल मुस्कान है।

जब सब पेड़ हरियाली बचाने में लगे रहते हैं,
तब गुलमोहर अपना पूरा हृदय फूलों में बदल देता है।
शायद इसलिए वह सिर्फ देखा नहीं जाता, महसूस किया जाता है।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

8. देखो कैसे सजकर आया गुलमोहर

अंगारों-सा दहक रहा है
चिलचिलाती इस धूप में,
देखो कैसे सजकर आया
गुलमोहर अपने रूप में।

हरी पत्तियों की ओट तले
सुर्ख लाल मुस्काते फूल,
तप्त दुपहरी की बाहों में
हर लेते मन के सब शूल।

धरती पर जब झर पड़ते हैं
इसके कोमल लाल दल,
लगता मानो धरा बिछाए
मखमली-सा रक्तिम आँचल।

थके पथिक को शीतल छाया,
मन को देता नव उल्लास,
प्रकृति का अनुपम यह उपहार
भर देता जीवन में प्रकाश।

ज्येष्ठ मास की तपती बेला में
जब झुलस उठे सारा संसार,
तब दहक-दहक मुस्काता यह
ऋतु का बनकर लाल श्रृंगार।

डॉ. संगीता बिंदल, पूना, महाराष्ट्र

9. मुस्कुराता गुलमोहर

सड़क के किनारे लगा गुलमोहर
अपने अनुपम रूप-रंग लिए मुस्कुराता खड़ा है,
जाने कितने दर्द सीने में लिए।

अपने अंदर के ताप को
अपने फूलों में रंग भर, मुस्कुराता है।
तपती दोपहरी में पथिकों को छाँव दे जाता है।

बचपन की कई यादें इसे देख ताज़ा हो जाती हैं।
गर्मी में गर्म थपेड़ों को खाकर भी
अडिग खड़ा मुस्कुराता है।

हवा के तेज झोंकों से
अपने फूलों की बरसात करता है।
रंग भरी बरसात क्या बादल करेंगे,
जो ये गुलमोहर करता है।

आज भी किसी के लौटने के इंतज़ार में
मुस्कुराता खड़ा है।
न जाने इसे किसका इंतज़ार है।

इसे देखते ही आत्मिक शांति भी मिलती है।

लहू से लाल रंग लिए जब ये खिलता है,

सोचने पर मजबूर करता है,

जाने कहाँ से इतना सुंदर रंग ये पा जाता है।

हर दिल को खुश कर जाता है।

गर्मी में भीषण ताप में ठंडक बन जाता है।

सबका प्रिय, धधकते अंगारों में भी शीतलता दे जाता है।

अदिति रूसिया, वारासिवनी

10. आँगन में गुलमोहर आये

तुम खिल गये आँगन में गुलमोहर।
पोर-पोर महक गई अमराई।
बहक गई शाखा से लिपट बेल।
इतराई लहक गई।

आये तुम, झूम उठी उमस भरी दोपहर।
थिरक उठा मन सुगना।
सगुनों की पांत लगी न्योत रही सपनों को।
सौरभ से साँस पगी।
अंगड़ाई नदिया तो नाच उठी लहर-लहर।

भाव भरी वंशी के गीतों को प्राण मिले।
राग के सरोवर में रसभीने सुमन खिले।
छंदों के जादू ने बाँध लिया यायावर।

डॉ. मधु प्रधान, कानपुर

11. "एक गुलमोहर का एकालाप"

मैं ग्रीष्म का पहला हस्ताक्षर हूँ।
पंचतत्व ने जब धरा को तवे-सा तपाया,
तब विधाता ने मुझे भेजा।

कहा, "जा, इस तपती देह पर लाल चंदन का
लेप कर दे।"
मेरा नाम गुलमोहर।

लोग मुझे ‘मई का इश्क’ कहते हैं।
मैं राजपथ पर खड़ा अल्हड़ प्रेमी हूँ।
न माली की प्रतीक्षा,
न सींचने की याचना।
मैं स्वयं ही बादल हूँ और स्वयं ही वर्षा।

मेरी पंखुड़ियाँ जब धरा चूमती हैं,
तो लगता है
कामदेव ने अपना तरकश उलट दिया।

बचपन में मेरी छाँव में
‘परीक्षा’ से मुक्ति की घंटी बजी थी।
आज मेरी छाँव में
‘ईएमआई’ से त्रस्त माथे पसीना सुखाते हैं।
मैं साक्षी हूँ।
समय बदला, पर मेरी ऋतु नहीं बदली।

गुलाब अभिजात्य है, मोल लेता है।
मैं फकीर हूँ, अनमोल बाँटता हूँ।

गुलाब मुरझाकर उपेक्षित हो जाता है।
मैं झरकर भी पथ का श्रृंगार कर देता हूँ।
मेरी मृत्यु भी उत्सव है।

नगर के नियंताओं ने पिछले वर्ष
मेरे भाई को 'विकास' के नाम पर विदा कर दिया।
मैं देखता रहा।
पीड़ा हुई।

पर मैं जानता हूँ,
काटने वाले हाथ भी एक दिन मेरी ही छाँव खोजेंगे।

मैं लौटूँगा।
हर मई लौटूँगा।
क्योंकि मैं केवल वृक्ष नहीं।
मैं आश्वासन हूँ।

कि कितनी भी लू चले, रंग बचेगा।
कि कितनी भी गिरावट आए, उठना बाकी रहेगा।

तुम जब भी निःशब्द होकर
मेरी शाख के नीचे बैठ जाना।
मैं शब्द नहीं दूँगा,
केवल आनंद और साहस दूँगा।

आनंद पाण्डेय "केवल"

12. "तुम्हें तो आना ही था"

आँगन भी जब
श्रृंगार की
रसनावली अलापे,

जब निगाहें
उतर खिड़की से
दिल की गहराई नापे,

भानु किरणें
यादों की
जब ले तस्वीर,

शशि कलाएँ
प्यार की जब
बदले तासीर,

गुलमोहर को
रंग बिखेर
झुक जाना ही था,

कैसे रहते दूर
तुम्हें तो
आना ही था।

प्रदीप कुमार अरोरा

13. आशियाना पथिक का

ग्रीष्म की प्रचंड तपिश में,
आसमान की ओर निहारता गुलमोहर।
गाँव, शहर, कानन में
लहकता प्रणम्य डालियों संग।

दे रहा हृदय से ईश को धन्यवाद
कि हे भगवान, तुमने मुझे
सहनशक्ति संग दी धैर्यता।

तभी तो दिवाकर की अग्नि को
सहजता से स्वीकार कर रहा हूँ।
अपने लाल तो कहीं नारंगी रंग से
दूर से ही अपनी पहचान दे रहा हूँ।

मुझे देख बढ़ते हैं
थके पथिक के कदम
तीव्रतम गति से मेरी ओर।

मैं गुलमोहर केवल एक वृक्ष नहीं।
तनिक देर के लिए ही सही,

पर मानुष को आशियाना सम
शांत, शीतल छाँव देता हूँ।

संग अपनी किस्मत पर फ़ख्र कर
ईश्वर, तुझे हर दिन प्रणाम करता हूँ।
कि तूने मुझे सदा किया सिंचित
अपनी वर्षा की एक-एक बूँद से।

मूल से पर्ण-पर्ण तक
दी मुझको असीम ताकत।
तभी तो झुलसाती गर्मी में
इस धरा पर औरों के सुख की खातिर
हर वर्ष अपने को विस्तृत करता हुआ
लहलहाकर उपकारी बन मुस्कुराता हूँ।

सीता गुप्ता, दुर्ग, छत्तीसगढ़

14. गुलमोहर का खिलना

गर्मी की वेदना जहाँ मानव को विचलित कर रही है,
वहाँ गुलमोहर का खिलना
उस कड़ी धूप को चढ़ाकर
बताता हुआ प्रतीत हो रहा,
मानव को सांत्वना-सी प्रदान करता हुआ
कि देख, इस मौसम की मार से व्यथित मत होना।

अपने कर्म से विमुख भी मत होना।
अगर थक गए हो,
तो मेरे खिले हुए लाल फूलों को देखो।
ये इसी आग में तपकर
कुंदन से चमकने लगे हैं।

मेरी छाया में तुम्हें सुकून मिलेगा।
तनिक विश्राम कर लो, पथिक,
फिर अपनी राह चलना।

मगर हौसले के संग
पुनः दोगुनी गति से
अपनी मंज़िल तय करना।

मैं तो राह तकता हूँ
ऐसे मौसम की।
जानते हो क्यों?

कठिन राह के बाद
सफलता की निश्चिंतता
मुख पर होगी,
जो क्षणभर की नहीं,
जीवन की जमा पूँजी होगी।

मुझे देखो, ठठाकर खिलता हूँ।
लहरकर शीतल आनंद देता हूँ।
बसकर मन में,
जो मुझसे होकर गुजरते हैं,
अगले साल प्रतीक्षित मिलते हैं मुझे
उसी जगह पर,
मुझे याद करते हुए।
क्योंकि मैं गुलमोहर हूँ।

किरण मोर, कटनी, म.प्र.

15. गुलमोहर का पेड़

सुरभित, पल्लवित हो उठे डाली पर।
चाँदनी में और चमक उठते
उसके वे फूल लाल और नारंगी।

दोपहर में जैसे धधक रही हो ज्वाला,
लगता है ऐसा गुलमोहर का पेड़।

कई बचपन बीते हैं उसकी छाँव तले।
आज भी याद आता है
वह फूलों का गिरना,
जैसे कुदरत ने धरा को सजाया हो।

सुंदर छटा बिखेरता चहुँ ओर,
है अद्भुत, अनुपम
वह गुलमोहर का पेड़।

मुक्ति भंडारी 'ममता'
पारा, जिला झाबुआ, मध्य प्रदेश

16. गुलमोहर मुस्कुराता है

धूप भरी उन राहों पर,
जब ग्रीष्म अंगार बरसाता है,
तब लालिमामय पुष्पों से
गुलमोहर मुस्कुराता है।

ज्यों नभ से उतरी हो अग्नि,
शाखों पर अंगारे खिले।
हर पत्ता जैसे वीणा बन
मधुर पवन के संग से मिले।

तपती धरती के आँगन में
यह शीतल छाया देता है।
थके पथिक के सूने मन में
नव आशा का दीप जलाता है।

इसके फूलों की लाली में
प्रेम और उत्साह बसें।
मानो प्रकृति स्वयं धरती पर
रंगों का उत्सव रचें।

हे गुलमोहर, तुमसे सजते
हर पथ, उपवन और हर द्वार।
तुमसे ही जीवन में आता
सौंदर्य, उत्साह, उमंग अपार।

मंजू सरावगी 'मंजरी' रायपुर, छत्तीसगढ़

17. रंग-बिरंगे होते गुलमोहर

रंग-बिरंगे होते गुलमोहर,
सजते राह-राह में सुंदर।
राहगीर की छाँव बनते,
मज़दूर का सहारा बनते।

बैठ गुलमोहर के तले
बतिया लेते दुख-सुख।
रहे एक पौधा,
वटवृक्ष होता चला।

जीवन भी पानी, धूप में तपता।
ज़िन्दगी रहे खुशहाल तभी,
जब पेड़ शीतल छाया वही।

ऊषा नौगरहिया, कटनी

18. गुलमोहर का रंग सुहाना

गुलमोहर का रंग सुहाना लगता है।
लाल रंग दिल को दीवाना करता है।
पीला फूल बहुत शीतलता देता है।
नारंगी मन में मादकता भरता है।

गुलमोहर के लाल फूलों ने
दिल में शोला जगा दिया।
'स्वर्ग का फूल' है यह,
हम लोगों ने इसको नाम दिया।

भरी गर्मियों में भी इनके
पेड़ पर फूलों की आभा।
इतने अधिक फूल होते
कि गिनना भी है कठिन बड़ा।

एक सप्ताह में पूरा वृक्ष
अंगारों जैसे फूलों से भर जाता है।
गर्म और नमी जैसे स्थानों में
पाया जाता है।

गुलमोहर के फूलों से
मकरंद बनाया जाता है।
हरसिंगार में पराग भी
प्रचुरता से पाया जाता है।

इसीलिए मधुमक्खियाँ
इन पर जब देखो मंडराती हैं।
भँवरों की गुंजार भी
अपनी मधुरिम तान सुनाती है।

राजसी आभूषणों से सजा हुआ यह वृक्ष है।
'राज-आभरण' नाम से भी विख्यात इसका नाम है।

श्रीकृष्ण की प्रतिमा के मुकुट का
गुलमोहर के फूलों से श्रृंगार किया जाता है।
इसलिए संस्कृत में इस वृक्ष को
'कृष्णचूड़' भी कहा जाता है।

मार्च-अप्रैल से लेकर जून-जुलाई तक
अपने ऊपर लाल-नारंगी रंग के फूलों की
ओढ़े रहता है चादर।

खुद भीषण गर्मी सह सबको
ठंडक का देता अहसास।
इसकी छाँव में बैठ पथिक के
मन का मिट जाता है त्रास।

राधा गोयल

19. धूप में तपते हुए से गुलमोहर

ये गुनगुनी-सी धूप में
तपते हुए से गुलमोहर।
अपलक निरखते नयन से
आँसू में ढलते गुलमोहर।

आकाश का मन मोह लेते,
धरा की लेकर सुगंध।
प्रकृति की अभ्यर्थना के
गीत गाते गुलमोहर।

झुकते नहीं, जो सहके भी
जलते सूरज की तपन।
झूमते हैं नील नभ में
सिर उठाकर गुलमोहर।

रंग ले अनुराग का
और लालिमा लालित्य की।
प्रीत का वैभव रचाते
मुस्कराते गुलमोहर।

स्वर्ग के फूलों-सी गरिमा
और आभा आत्म की।
धरा का सौंदर्य पाकर
दहकते हैं गुलमोहर।

पद्मा मिश्रा, जमशेदपुर

20. सिंदूरी गुलमोहर

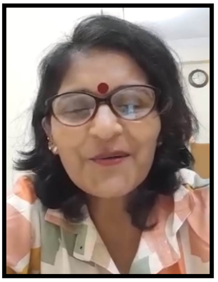

गुलमोहर के रंग-सी भर दो
माँग में सिंदूरी रेखा।
हैं अधूरे एक-दूजे बिन,
अहसास से हमने देखा।

दीप जला प्रीत के,
राह रोशनी करें प्रिय।
लकीरें मिली हथेलियों की,
भाग्य का अद्भुत लेखा।

ख़्वाब देखे हैं रूपहले,
ढाँप कर पलकों को अपनी।
तुम वही प्रीतम मेरे,
जन्मों से हूँ जिनकी संगिनी।

साक्षी बनेंगे गठबंधन के
बादल से बरसते मेघा।
गुलमोहर के रंग-सी भर दो
माँग में सिंदूरी रेखा।

खनखनाती चूड़ियों से
कलाई मेरी गुलज़ार होगी।
पायल की रुनझुन से
लाली रुखसार पे होगी।

पहचान पा इक नई,
मारे खुशी क्या हाल होगा।
गुलमोहर के रंग-सी भर दो
माँग में सिंदूरी रेखा।

लीना शर्मा, कोटा

21. गुलमोहर तुम कैसे हो?

जंगल, मंदिर, सड़कों के किनारे में
तुम लगते हो।
हरी-हरी पत्तियों के बीच
गुच्छे में तुम पलते हो।

प्रकृति ने दिया तुम्हें
लाल, नारंगी रंग तोहफे में।
ऐ गुलमोहर,
खिले हुए तुम बहुत सुंदर लगते हो।

ग्रीष्म ऋतु में तुम
अपने यौवन में पूरे आते हो।
भीषण तेज तपन में भी
तुम पूरे खिल जाते हो।

लगता दिनकर से तुम्हारा
बड़ा ही प्रेम भरा नाता है।
उसके मिलन से तुम
अपने को बेहद सुंदर बनाते हो।

आते-जाते रोज देखती हूँ

तुमको मैं, ऐ गुलमोहर।

आठ-नौ साल में

तुम बहुत बड़े हो गए हो, ऐ गुलमोहर।

तुमने पौधारोपण करना

सिखाया है 'रमा' को।

मंदिर के बाजू में

मेरे द्वारा लगाए गए ऐ गुलमोहर।

रमा 'प्रेम-शांति', प्रकृति-प्रेमी

22. गुलमोहर सी औरतें

जेठ की दोपहरी में

चोटी से एड़ी तक

पसीने में तरबतर,

सेंकती हैं गरम-गरम रोटियाँ

और नए-नए व्यंजनों की फरमाइश

पूरी करती हैं

भरी दोपहरी में,

मुस्कुराते हुए।

भीतर से टूटी हुई

स्वयं को मजबूत दिखातीं।

कितने तूफान,

कितने बवंडर समेटे

अपने आँचल में।

बिखेरती रहती हैं

मंद-मंद मुस्कान लिए

शीतल हवा के झोंके।

बचाती हैं लू से

अपने परिवार को

आमपना और दही की लस्सी पिलाकर।

छत पर बनाती हैं

बड़ी, चिप्स, पापड़ और कुडलई,

जो पसंद है परिवार को।

फिर भी प्रसन्न रहती हैं।

आनंद पाती हैं

सबको तृप्त करके।

हाँ, गुलमोहर-सी ही होती हैं

ये औरतें।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

23. गुलमोहर का नियति चक्र

तपती धूप, गर्म लू से
जिसका अंग-अंग खिल जाता है,
धवल, लाल, नारंगी होकर
वो पेड़ों पर बस जाता है।

आँखों को ठंडक,
दिल को सुकून पहुँचाता है।
तब गुलमोहर की छाँव में
वो चटक रंग बिखर जाता है।

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है,
सुवासित, मनभावन गंध
और नारंगी छटा
उतनी ही निखरती है।

देखो ना तुम गुलमोहर बाहर,
तुम्हारे साथ मेरे मन में भी
अनेक गुलमोहर खिल जाते हैं।

पर जब करते हो

तुम अवहेलना मेरे भावों की,

वो धरा पर बिछ जाते हैं।

पर सुवासित धरा का

अंग-अंग नई कहानियाँ रचता है।

गंध और रंग का मेल

अनोखा सृजन तब करता है।

छुप जाते हैं मन के वो फूल,

जिनपे नेह बन आँसू हर्षाते हैं।

और नियति चक्र तो देखो,

हर वर्ष यही कहानी दोहराते हैं।

नमिता दुबे 'मिशा'

24. पाँच वृक्ष लगाओ

सूरज जब अंगारे उगले,
राहगीरों को छाँव न दिखती
दूर-दूर तक वृक्ष न दिखते।

लू-लपट से बेहाल हो जाते।
गुलमोहर की शीतल छाया
राहगीर को ठंडक दे जाते।

बैठे नीचे ठंडी छाँव में
सारी थकान ये हर ले जाते।

नारंगी फूल प्रकृति की रचना,
उस कलाकार की अनुपम रचना।
सघन हरी कोमल पत्तियाँ।

रे मानव, पेड़ काटकर
मत करो गलतियाँ।

जीते जी पाँच पेड़ लगाओ।
पीपल, बरगद, गुलमोहर लाओ।
आम, जामुन, अमरूद लगाओ।
आने वाली पीढ़ी पर
उपकार कर जाओ।

अर्चना कटारे, शहडोल, म.प्र.

25. जीवट गुलमोहर

तुम्हारी जीवटता

प्रदान करती संबल।

तुम्हारा घना-घना साया

देता ठंडक।

लगे समय को स्थिरता

प्रदान करते हो

लू के थपेड़ों भरी दोपहर में।

तुम्हारे सुंदर, चमकीले, रंगीले फूल

हर अशांति को हर लेते हैं

और देते हैं आँखों को शीतलता

लू के थपेड़ों भरी दोपहर में।

हे गुलमोहर,

काश! तुम्हें निहारते हुए,

छोटी-छोटी रंगीन पंखुड़ियाँ बुहारते हुए

तुमसे अडिग रहने की कला सीख जाऊँ

लू के थपेड़ों भरी दोपहर में।

ख़ुशी, प्रयागराज

27. मेरे बागीचे की जान

अपने बाग में टहलते हुए,

नज़र पड़ी एक पेड़ पर,

फिर नीचे पड़े गुलमोहर के ढेर पर।

सुंदरता कैसे जाया हुई होगी उसकी झड़ते हुए।

जिसके चलते बच्चे आते थे मेरे बागीचे में,

और दूर से सराहते थे आलम जिसको।

समय ने सुला दिया उसको,

जिसके कारण सुबह होती मेरे बागीचे में।

उसकी लालिमा से मेरी सुबह की सान होती थी।

अब देखता हूँ उस बिना श्रृंगार के पेड़ को।

हवा के झोंकों ने बिखेर दिए गुलमोहर के ढेर को,

जिसमें मेरे बागीचे की जान होती थी।

प्रणव राज, कैमूर, बिहार

28. गुलमोहर अनुपम कृति

गुलमोहर के वृक्ष पे लगते हुए ये सुर्ख रंग
है ज़िंदगी की धूप में जैसे हो कोई छाँव संग

जब देखती हूँ इनको मैं लगता है जैसे प्यार है
इस धरती का इस सूर्य से ये प्यार का विस्तार है

वरना कहाँ इस धूप में कोई खिला हो फूल जो
ये प्रकृति का प्रेम है इसमें न कोई शूल हो

है धन्य सी ये पृथ्वी और धन्य है ये प्रकृति
जिसमें रची उस ईश्वर ने अपनी अनुपम ये कृति।

डॉ आशु जैन

29. सूर्ख गुलमोहर

मेरे स्कूल का गुलमोहर।
अपने किरदार निभा रहा।

लाल रंग के फूलों से लदी।
डाली भी झुक जाती है।

ग्रीष्म ऋतु का यह उपहार।
विरहिणी के लिए बना अंगार।

राहगीरों की छाया बनकर।
तपती धूप में सुहागन सा सजकर।

आज भी सुकून की छाया देती।
बचपन की ढेरों यादों संग सुरक्षित।

लाल फूल सूर्ख गुलमोहर।
इतराता अपने डाल पर।।

प्रेम सिंह "काव्या"

प्रिय गुलमोहर

(साझा संकलन)

- गार्मियों की तपती दोपहरों में जब धरती का धैर्य भी मानो पिघलने लगता है, तब प्रकृति अपने सबसे उजले रंगों में से एक रंग चुनती है– गुलमोहर। आग–सी दहकती उसकी लालिमा केवल दृश्य–सौंदर्य नहीं रचती, बल्कि जीवन के संघर्षों के बीच मुस्कुराना भी सिखाती है।

- एक दिन अन्तरा शब्दशक्ति परिवार में यूँ ही साहित्यिक सक्रियता को निहारते हुए मन में विचार आया कि क्यों न इस बार शब्दों को भी गुलमोहर की तरह खिलने दिया जाए। बस, उसी सहज भाव ने इस साझा संकलन "प्रिय गुलमोहर" को जन्म दिया।

- देखते ही देखते विभिन्न नगरों, संवेदनाओं, आयु–वर्गों और अनुभवों से जुड़े रचनाकारों ने अपने–अपने भावों के रंग इसमें भर दिए। किसी ने गुलमोहर में प्रेम देखा, किसी ने प्रतीक्षा, किसी ने संघर्ष, तो किसी ने स्मृति का हर्ष। कहीं वह पत्रिक की छाँव बना, कहीं स्मृतियों का आँगन और कहीं जीवन का साहस।

- इस संकलन की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यहाँ गुलमोहर केवल एक वृक्ष नहीं रहा, वह मनुष्य के भीतर खिलती संवेदनाओं का प्रतीक बन गया।

- इन रचनाओं में प्रकृति–प्रेम भी है, सामाजिक चेतना भी, आंतरिक ऊष्मा भी और जीवन–दर्शन भी।

- मैं हृदय से सभी रचनाकारों की आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी भावनाओं के पुष्प इस साहित्यिक उपवन में समर्पित किए। हँ थ ही अंन्तरा शब्दशक्ति परिवार के प्रति भी स्नेह और विश्वास व्यक्त करती हुं, जिन्तने निरंतर साहित्यिक प्रयास ऐसे सृजन को संभव बनाते हैं।

- आशा है, यह संकलन पाठकों के मन में भी उसी तरह रंग बिखेरेगा, जैसे तपती धैर्य में अचानक खिल उठो कोई गुलमोहर।

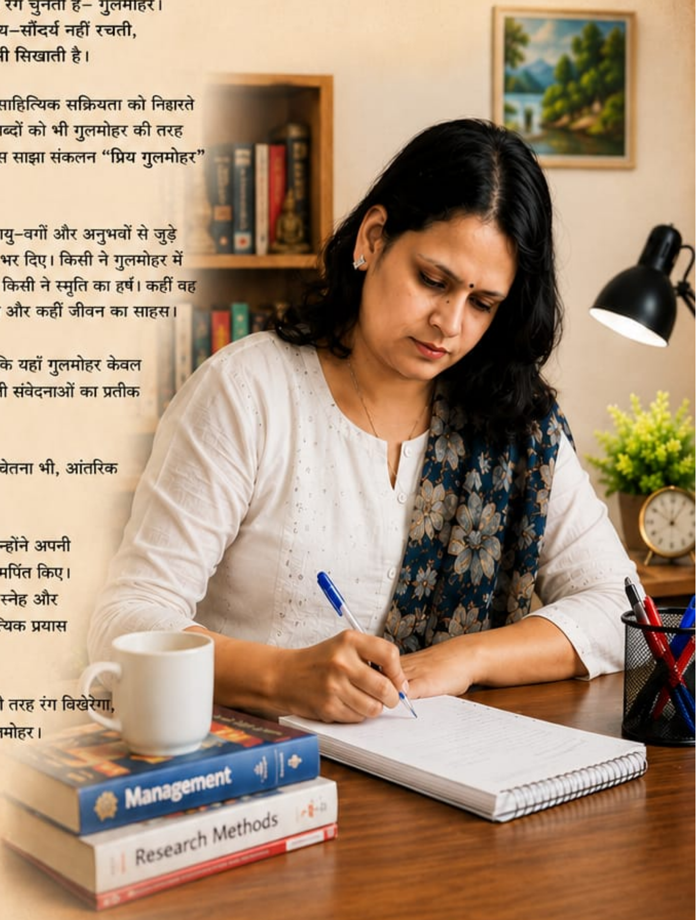

डॉ. प्रीति समकिंत सुराना
संकलनकर्ता एवं संपादक
"प्रिय गुलमोहर"
संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी म.प्र.

पं.क. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Facebook group:- https://www.facebook.com/groups/antrashabdshakti/
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
मो.– 9009465259,
ईमेल– antrashabdshakti@gmail.com

Antrashabdshaktifprakashan

मूल्य – 280/–